बाजरा (Pearl millet)

गर्मी के चारों में बाजरा सबसे अधिक पैदावार देता है। अधिक पत्तियां होने व रसीला होने के कारण यह स्वादिष्ट होता है व इसमें प्रोटीन भी काफी होता है। अन्य चारा फसलों के मुकाबले यह जल्दी बढ़ता है। यह खासतौर पर गर्मियों के लिए एक अच्छा चारा है क्योंकि इसमें एच सी एन नहीं होता।

किस्में

किसी भी सिफारिश की गई संकर बाजरे की किस्म की दूसरी पीढ़ी का बीज अन्य स्थानीय किस्मों से अधिक पैदावार देता है।

मिट्टी व खेत की तैयारी (Soil and field preparation)

इसके लिये रेतीली दोमट मिट्टी सबसे अच्छी रहती है। खेत की तैयारी करने के लिये 2-3 बार जुताई करनी चाहिये, जिससे मिट्टी भुरभुरी हो जाए व बीज का अंकुरण अच्छा हो।

बीज व बिजाई (Seed and sowing)

बाजरे की चारे के लिये बिजाई मार्च के अन्त या अप्रैल के शुरू में करनी चाहिये ताकि मई-जून में चारे की कमी वाले दिनों में चारा मिलता रहे। शुद्ध बाजरे की चारे की बिजाई के लिए प्रति एकड़ 3-4 किलोग्राम बीज से 30 सेंटीमीटर की दूरी रखकर कतारों में बिजाई करें। यदि बाजरे की मिलवां बिजाई करनी हो तो प्रति एकड़ बाजरे का 2-2.5 किलोग्राम और लोबिया का 5 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ प्रयोग करें। बिजाई पर्याप्त नमी में पोरा या केरा विधि से इस प्रकार

करें कि दो कतारों के बाद एक कतार लोबिया की हो। दो कतारों के बीच का फासला 30 सेंटीमीटर रखें।

उर्वरक (Fertilizer)

बाजरा नाइट्रोजन वाली खाद डालने से काफी बढ़ता है। प्रति एकड़ 20 किलोग्राम नाइट्रोजन (43.5 किलोग्राम यूरिया 46%) बिजाई के समय ड्रिल करें व 10 किलोग्राम नाइट्रोजन (22 किलोग्राम यूरिया 46%) बिजाई के एक महीने बाद खड़ी फसल में डालें।

चारे की पैदावार (Green fodder yield)

इसका चारा बीजने के 50–55 दिन बाद तैयार हो जाता है और करीब 160 क्विंटल प्रति एकड़ पैदावार होती है। अधिक पौष्टिक चारे के लिए बाजरा व लोबिया की मिश्रित खेती की सिफारिश की जाती है।